गौर

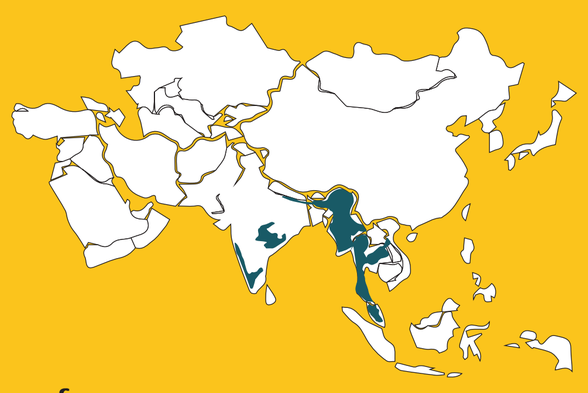

आईयूसीएन (IUCN): असुरक्षित

पर्यावास: पहाड़ी जंगल और घासदार इलाके

आबादी

विश्वभर	लगभग 30,000
भारत	लगभग 28,000

- गाय प्रजाति में यह सबसे लंबा और भारी होने की क्षमता रखता है
- यह यौन रूप से द्वीरूपी होता है, नर और मादा दोनों के सींग होते हैं
- वयस्क नरों के चमकदार काले बाल होते हैं और गले से लेकर सामने के पैरों तक ढीली त्वचा झूलती रहती है
- वयस्क मादाओं का रंग गहरा भूरा होता है और उनके सींग पतले होते हैं
- सुबह और शाम को सबसे ज़्यादा सक्रिय; इंसानी पर्यावासों में निशाचर
- सींग से आक्रमण करने के लिए अपने सिर और पीछे की टांगों को नीचे झुकाता है
- चौकन्ना होने पर 'सीटी के साथ घरघराने' की आवाज़ निकालता है
- अपने बड़े आकार के बावजूद बहुत ही शर्मिला और शांत है
- केवल उकसाने या बहुत पास जाने पर ही यह आक्रमण करता है

प्रजनन

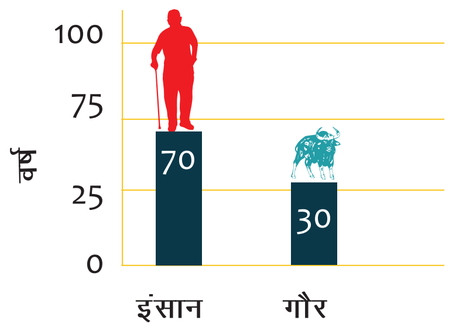

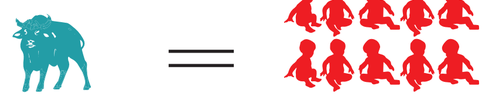

प्रजनन सालभर होता है लेकिन दिसम्बर और जून के बीच सबसे ज़्यादा होता है

प्रजनन के मौसम में नर की गर्जन 1.6 किलोमीटर दूर से भी सुनाई देती है

औसत जीवनकाल

प्रजनन आयु

2–3 साल

गर्भकाल :

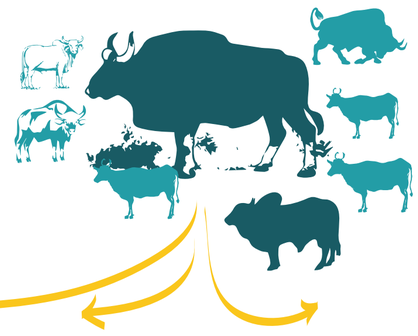

9 महीने → हर एक मादा 1–1.5 साल में बछड़े को जन्म देती है

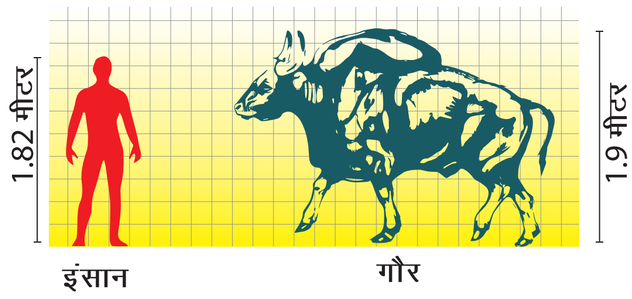

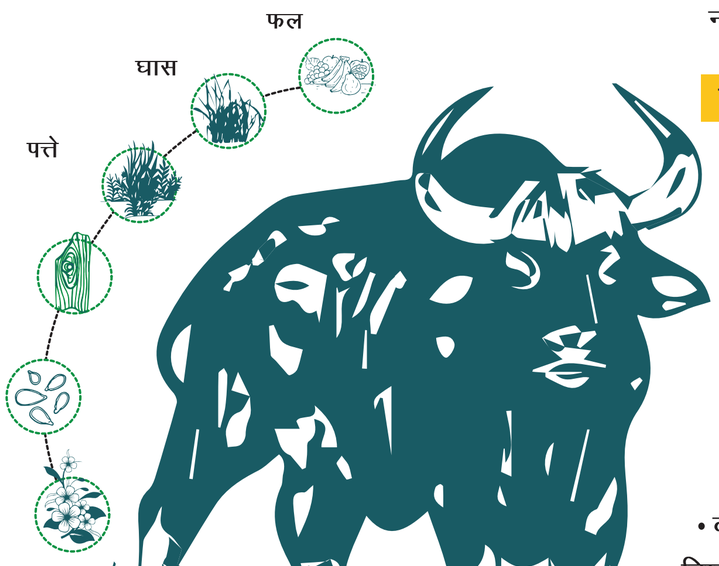

एक बार में 1 शावक

वज़न: 23 किलो

समूह की संरचना

मौसम और पर्यावास पर निर्भर करता है

एक सांड के साथ 8–11 मादाएं

प्रजनन मौसम के दौरान:

ज़्यादा नर झुंड में शामिल हो जाते हैं

प्रजनन मौसम के बाद:

नर झुंड से निकल जाते हैं

आहार

क्या आप जानते हैं?

- गौर पौधों के समुदायों और भूदृश्य परविर्तन को नियंत्रित कर पारिस्थितिक तंत्र को संतुलित रखते हैं
- गौर का शिकार पशु ट्राफी, सींग, खेल और कुछ क्षेत्रों में मांस के लिए किया जाता है
- गौर को रिंडरपेस्ट और मुंहपका–खुरपका जैसी मवेशी बीमारियां आसानी से हो जाती हैं
- इनकी आबादी को पर्यावास के विनाश से सबसे ज़्यादा ख़तरा है
- गौर और इंसानों के बीच संघर्ष पहले इतना गंभीर मुद्दा नहीं था लेकिन पर्यावास के नष्ट होने से यह एक गंभीर मुद्दा बनता जा रहा है
- क्योंकि गौर शर्मिले होते है, इसलिए संघर्ष काफी हद तक गांवों में फसल के नुकसान और अतिक्रमण तक सीमित होता हैं
- निम्नीकृत पर्यावासों में सुधार गौर और इंसानों के बीच संघर्ष को कम कर सकता है

अधिकतम वज़न – 1,000 किलो

अधिकतम लंबाई – 1.9 मीटर

भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन पर भारत–जर्मनी सहयोग
2017 – 2023

भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन के संबंध में सामंजस्यपूर्ण सहास्तित्व पद्धति का क्रियान्वयन